66

# आत्मा का घर

## ( 21:9-21 )

घर कितना सुन्दर शब्द है! किसी ने कहा है कि "घर वह होता है जहां मन लगता हो।" ओलिवर वेंडल होल्मस ने कहा है कि घर वह है "जहां हम प्रेम करते हैं," यानी वह जगह "जहां से हमारे पांव तो निकल सकते हैं, परन्तु दिल नहीं।"[1] जॉन हावर्ड पेयन ने लिखा है, "मध्य सुखों तथा महलों में हम घूमते तो होंगे, परन्तु इतना दीन होने के बावजूद घर जैसी कोई जगहर नहीं है।"[2]

सांसारिक घर बहुत अच्छे हैं, फिर भी हममें से कई लोग आसमानी घर की राह देखते हैं। हम उसका अनुभव करना चाहते हैं, जिसे पौलुस ने "प्रभु के साथ रहना" (2 कुरिन्थियों 5:8) यानी वह जगह कहा, जिसे बुद्धिमान ने "सदा का घर" (सभोपदेशक 12:5) कहा, जिसे जेम्स रोअ ने "आत्मा का घर" कहा है।

सनातन घर
यदि वह पुरस्कार, जिसके लिए हमने प्रयास किया है,
हमारे परिश्रम होने के बाद,
हमारे प्राणों को चैन दिया जाएगा।

आत्मा का घर, सुन्दर घर
वहां आराम होगा, कभी न घूमने के लिए,
हर चिन्ता से दूर, प्रसन्न और चमकदार
यीशु वहां है, जो ज्योति है! ...[3]

इस पाठ का उद्देश्य प्रकाशितवाक्य 21:9 से 22:5 में मिलने वाले "आत्मा के घर" की कुछ खूबियों की गणना करना है। ऐसा करने पर हमें समझ आती है कि इसमें सांकेतिक भाषा का इस्तेमाइ किया गया है। न्यू जीनिया के रहने वालों को एस्कीमो इग्लू के बारे में बताना हो तो आप कैसे समझाएंगे? रेगिस्तान के पर्यटक को मिनेसोटा की झीलों के बारे में बताना हो तो आप कैसे समझाएंगे?[4] किसी छोटे लड़के को जिसने एक मंज़िला मकान से ऊंची इमारत कभी नहीं देखी उसे न्यूयार्क नगर के बारे में बताना हो तो आप कैसे बताएंगे? इन सब बातों को समझाने के लिए आप इस बात का ध्यान रखेंगे। आप उनको वैसे ही बता पाएं जैसे वे समझ सकते हैं, जिस कारण प्रत्येक मामले में आप वही नहीं बता पाएंगे जो आप बताना चाहते हैं। स्वर्ग का विवरण देते समय यूहन्ना ने भी यही किया।

कई साल पहले किसी मसीही दम्पत्ति के यहां एक सुन्दर लड़की का जन्म हुआ। कई हफ्ते बाद उसके माता-पिता ने ध्यान दिया कि उसकी नज़र में फर्क है। आंखों के डाक्टर ने उन्हें बताया, ''आपकी बेटी लगभग अन्धी ही है। शायद वह कभी देख न पाए।'' फिर उसने कहा, ''परन्तु हो सकता है कि बारह साल की हो जाने पर इसका आप्रेशन किया जाए तो इसकी नजर लगभग सामान्य हो जाए।''

आप कल्पना कर सकते हैं कि बारह साल के लम्बे अन्तराल में प्रतीक्षा करते हुए उसके माता-पिता का क्या हाल हुआ होगा। अन्ततः बेटी के बारह साल की हो जाने पर उन्होंने आंख के ऑपरेशन के लिए यूरोप का सबसे प्रसिद्ध डाक्टर ढूंढ़ा। ऑपरेशन आल्पस नामक जगह के एक अस्पताल में होना था। ऑपरेशन की तैयारी के दौरान उसकी मां उसे पकड़े हुए अपने आस-पास के ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों की बातें करके उसे बातों में लगाकर उसका ध्यान हटा रही थी।

आप्रेशन हो जाने के बाद माता-पिता, डाक्टर तथा नर्सें बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। अन्त में पट्टियां उतारने का समय आ गया। मेरी ने सबसे शानदार नजारा जो देखा वह उसकी खिड़की के बाहर ऊंचे पहाड़ों का था। गालों पर आंसू टपकते हुए, उसने मां से पूछा, ''मम्मी, आप ने मुझे यह क्यों नहीं बताया कि यह संसार बहुत सुन्दर है ?''

मेरी की मां ने उसे बाहों में लिया और कहने लगी, ''मेरी बेटा, मैंने तुझे बताने की कोशिश की थी, परन्तु समझा नहीं पाई।''

उसी प्रकार परमेश्वर के छुड़ाए हुए बालक महिमा के घर में पहुंचने पर कहेंगे, ''भाई यूहन्ना, आपने हमें यह क्यों नहीं बताया कि यहां ऊपर इतना सुन्दर है ?'' वह हमसे कहेगा, ''बच्चो मैंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ... बताने की कोशिश की, परन्तु समझा नहीं पाया।''[5]

जैसे अध्याय 20 में मैंने सुझाव दिया था, काश मेरे पास सुलैमान जैसा दिमाग होता। अध्याय 21 और 22 को लिखने के समय मैंने चाहा कि मेरे पास दाऊद जैसी ज़बान होनी चाहिए। इन अध्यायों के संकेतों को समझने में आप की सहायता के लिए मैं हर सम्भव प्रयास करूंगा। ऐसा करने के बाद हम केवल चकित होंगे कि स्वर्ग सचमुच कितना शानदार है।

यह पाठ 21:9-21 पर और अगला पाठ 21:22-22:5 पर होगा। इस प्रस्तुति में यह ज़ोर दिया जाएगा कि वह नगर कितना सुन्दर है।

## अद्‌भुत दृश्य (21:9-11क)

वचन पाठ आरम्भ होता है, ''फिर दिन सात स्वर्गदूतों के पास सात पिछली विपत्तियों से भरे हुए सात कटोरे थे, उन में से एक मेरे पास आया, और मेरे साथ बातें करके कहा; इधर आ: मैं तुझे दुल्हिन[6] अर्थात मेमने की पत्नी दिखाऊंगा'' (आयत 9)।

इस अवसर के लिए चुने गए दूत कुछ हैरान करने वाला है: एक स्वर्गदूत जिसने क्रोध का कटोरा उण्डेला था। वे कटोरे बदला लिए जाने और निराशा से जुड़े थे, परन्तु यह सन्देश

विजय और आशा का है। इस स्वर्गदूत को शायद इसलिए चुना गया ताकि हम पुराने "बड़े" बाबुल और नये, पवित्र यरूशलेम में अन्तर को समझ सकें। 17:1 में क्रोध के कटोरे लिए हुए स्वर्गदूतों में से एक ने यूहन्ना को बताया, "इधर आ, मैं तुझे उस बड़ी वेश्या का दण्ड दिखाऊं।" अब उन सात स्वर्गदूतों में से एक (शायद उसी) ने कहा, "इधर आ मैं तुझे दुल्हन अर्थात मेमने की पत्नी दिखाऊंगा।"

बहुत पहले, मूसा को प्रतिज्ञा किए हुए देश को देखने के लिए पिसगा पहाड़ की चोटी पर खड़ा होने की अनुमति मिल गई थी (व्यवस्था विवरण 3:27; 34:1)। वैसे ही स्वर्गदूत यूहन्ना को परमेश्वर की महिमा से भरे "पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते"[7] हुए दिखाने के लिए आत्मा में[8] "एक बड़े और ऊंचे पहाड़ पर ले गया"[9] (आयतें 10, 11क)। (पवित्र नगरी यरूशलेम के परमेश्वर के पास स्वर्ग से नीचे उतरने का चित्र देखें।)

## चमचमाता नगर (21:11, 15, 16ख, 18ख, 21ख)

नीचे उतरने वाला नगर कीमती मोती की तरह था, "उसकी ज्योति बहुत ही बहुमोल पत्थर, अर्थात बिल्लौर के समान यशब की नाई स्वच्छ थी" (आयत 11ख)। यूहन्ना ने "परमेश्वर की महिमा देखी थी" (आयत 11क)। सिहांसन के आरम्भिक दृश्य में परमेश्वर को "यशब और माणिक्य सा दिखाई पड़ता" बताया गया था (4:3)। यहां हम देखते हैं कि सृष्टि में सृष्टिकर्ता का गुण आ गया था। इसमें भी "यशब और माणिक्य सी" चमक थी। हीरे की चमक, मेघधनुष की चमचमाते रंगों पर विचार करें।[10]

स्वर्गदूत "के पास नगर और उसके फाटकों और उसकी शहरपनाह को मापने के लिए सोने का एक गज था" (आयत 15)।[11] नगर का आकार टेढ़ा मेढ़ा था: "उसने उस गज से नगर को नापा तो 12,000 स्टेडिया लम्बा निकला, उसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई बराबर थी" (आयत 16ख; NIV)। *स्टेडियन* (रोमी माप) मील (1.6 कि. मी.) का आठवां भाग होता था।[12] इस कारण NASB में कहा गया है कि नगर हर दिशा से "पन्द्रह सौ मील"[13] यानी 2400 कि. मी. यानी पन्द्रह सौ मील (चौबीस सौ कि. मी.) चौड़ा पन्द्रह सौ मील लम्बा और पन्द्रह सौ मील ऊंचा था।

साढ़े सात सौ कोस (या पन्द्रह सौ मील) यानी "लन्दन से एथेंस की दूरी, न्यूयार्क से ह्यूस्टन, दिल्ली से रंगून, एडलेड से डारविन"।[14] पन्द्रह सौ मील लम्बा और पन्द्रह सौ मील चौड़ा यानी "अमेरिका के टैक्सस राज्य से 8.4 गुणा और आस्ट्रेलिया या यूरोप से भी बड़ा।"[15] इसके अलावा यह नगर पन्द्रह सौ मील ऊंचा भी था। सौ मंज़िला इमारत की कल्पना करें। (संसार में केवल कुछ इमारतें ही इतनी ऊंची हैं।) इस इमारत को बढ़ाते हुए उत्तरी अमेरिका तक ले जाएं। इसे एक सौ *पचास* मंज़िला ऊंचा कर दें। फिर इस पर चकित हों: आप पन्द्रह सौ मील (2400 कि. मी.) आकाश में उस आकार की नब्बे इमारतें लटका सकते हैं। यह कहना भी कम होगा कि पृथ्वी पर यह नगर पहले किसी ने नहीं देखा!

आयत 16ख में दिए गए ज़बर्दस्त अनुपातों से नगर की दो बातें पता चलती हैं। पहली यह कि नगर सिद्ध है, जैसा कि प्रकाशितवाक्य के इस भाग में अंक "बारह" के इस्तेमाल से जोकि मुख्य सांकेतिक अंक में दिखाया गया है। (21:12, 14, 21; 22:2)। "बारह" ईश्वरीयता के अंक ("तीन") को सृष्टि के अंक ("चार") से गुणा करने पर सम्पूर्णता या सिद्धता का विचार मिला।[16] बढ़ाई गई संख्या "बारह सौ" *सम्पूर्ण* सिद्धता का संकेत है।[17] नगर के बेदाग होने को इस तथ्य से भी दिखाया गया था कि नगर का आकार घन में था;[18] प्राचीन लोग घन को सिद्धता का प्रतीक मानते थे। मन्दिर में परम पवित्र स्थान पूर्ण घन था (देखें 1 राजा 6:20) और नये यरूशलेम को *अन्ततः* "परम पवित्र स्थान" कहा गया है।

दूसरा, बेतुके अनुपातों का अर्थ है कि जो सचमुच स्वर्ग में जाने के इच्छुक हैं (जो इतने इच्छुक हैं कि तैयारी कर सकते हैं) उनके लिए पर्याप्त प्रबन्ध किया गया है। निमन्त्रण *हर किसी* को दिया जा सकता है, "और आत्मा, और दुल्हिन दोनों कहती हैं, आ; और सुनने वाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए, और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले" (22:17)।

पूरे नगर का एक और विवरण दिया गया है: आयत 18 कहती है कि "नगर ऐसे शुद्ध सोने का था, जो स्वच्छ कांच के समान हो" (आयत 18ख), जबकि आयत 21 से पता चलता है कि "नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान शुद्ध सोने की थी" (आयत 21ख)। हीरे जैसा चमकने वाला सोना? शीशे जैसा पारदर्शी सोना? भवन सामग्री इस पृथ्वी की न होना, इस बात की घोषणा है कि स्वर्ग की तरह कीमती सबसे शानदार बिल्लौर की तरह शुद्ध है।

## पनाह की दीवार (21:12क, 14, 17, 18क, 19, 20)

फिर यूहन्ना का ध्यान स्वर्ग की ओर दिलाया गया। पहली शताब्दी में, हर बड़े नगर की रक्षा के लिए इसके चारों ओर दीवारें होती थीं, जिन्हें शहरपनाह कहा जाता था। वैसे स्वर्गीय नगर की "शहरपनाह बहुत ऊंची थी" (आयत 12क)।

नापने वाले सोने के गज़ से स्वर्गदूत ने "इसकी दीवारों को नापा और यह मनुष्य के नाप से जिसे स्वर्गदूत इस्तेमाल कर रहा था, 144 हाथ चौड़ा निकला"[19] (आयत 17; NIV)। हाथ कोहनी से लेकर बीच वाली उंगली के सिरे तक (लगभग डेढ़ फुट लम्बा) होता था। इसी कारण NASB में कहा गया है कि दीवार "बहत्तर गज़" थी।[20] बहत्तर गज़ लम्बी या बहत्तर गज़ चौड़ी? NIV में संकेत है कि दीवार बहत्तर गज़ चौड़ी थी, परन्तु अधिकतर लेखकों का दावा है कि इसका अर्थ है यहां ऊंचाई है।[21] महत्व इस बात का है कि सिद्धता का प्रतीक इस्तेमाल किया गया था या बारह को बाहर से गुणा किया गया। नगर पूरी तरह सुरक्षित था।

नगर की तरह (21:11) शहरपनाह भी यशब की थी (आयत 18क)।[22] यह असांसारिक चमक से चमकती थी।

शहरपनाह की सबसे अद्‌भुत बात इसकी नींवें थीं। शहरपनाहों की नींवें आमतौर पर एक ही होती थी, परन्तु इस "शहरपनाह की बारह नीवें थी," और नीवों पर "मेमने के बारह प्रेरितों[23] के नाम लिखे थे" (आयत 14)। इससे हमें ध्यान आता है कि मसीहियत "प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है" (इफिसियों 2:20) बनी थी।

इसके अलावा शहरपनाह की नींव आमतौर पर धरातल से नीचे होती; परन्तु ये नीवें दिखाई दे रही थीं और "हर प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों से संवारी हुई थीं" (आयत 19क)।[24] इस भव्य प्रदर्शन की कल्पना करने की कोशिश करें (आयतें 19, 20)। यशब के हरे नीलमणि के नीलेपन, लालड़ी के दुधिया भूरे, मरकत के हल्के हरे, गोमेदक के सफ़ेद, माणिक्य के लाल, पीतमणि के पीलेपन वाले हरे, परोज़ के बैंजनी, पुखराज के पीले, लहसनिए के सुनहरी, धूम्रकान्त के नीले, याकूत के बैंजनी रंग अर्थात "स्वपन पत्थर" से आपकी आंखें चुंधिया जाएंगी। प्रेरितों की शिक्षा और उदाहरण से डाली गई नींव को कितनी ज़बर्दस्त श्रद्धांजलि है!

## आश्चर्यजनक फाटक (21:12ख, ग, घ, 13, 21क)

यूहन्ना ने उसके फाटकों का वर्णन भी किया। उसके समय के नगरों का आमतौर पर एक ही फाटक होता था, जिसे रात को या नगर पर आक्रमण के समय बन्द कर दिया जाता था। नये यरूशलेम की शहरपनाह के कुल "बारह फाटक" (आयत 12) यानी "पूर्व की ओर तीन फाटक, उत्तर की ओर तीन फाटक दक्खिन की ओर तीन फाटक, और पश्चिम की ओर तीन फाटक थे" (आयत 13)। बारह फाटक रखने का उद्देश्य यह संकेत देना *नहीं* थाा कि "स्वर्ग के कई मार्ग है"; यीशु ने दावा किया कि "*द्वार*" वह ही है (यूहन्ना 14:6)। इसके बजाय अंक "बारह" फिर सिद्धता का संकेत देता है: अपने आप को तैयार करने के इच्छुक लोगों के लिए भरपूर अवसर दिया गया है। इस तथ्य से कि फाटक पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिम में थे, मसीहियत के विश्वव्यापी आकर्षण का सुझाव मिल सकता है यानी लोगों ने पृथ्वी के हर भाग से इसमें आना था (मत्ती 28:19; प्रेरितों 1:8)।[25]

बारह फाटकों पर "बारह स्वर्गदूत" खड़े थे (प्रकाशितवाक्य 21:12ग)। क्या उन्हें अयोग्य लोगों को प्रवेश करने से रोकने के लिए वहां लगाया गया था? शायद (21:27; 22:15) ऐसा ही था। दूसरी ओर, स्वर्गदूतों को "सेवा टहल करने वाली आत्माएं" कहा गया है "जो उद्धार पाने वालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं" (इब्रानियों 1:14)। आत्माओं का उद्धार होने पर स्वर्गदूत आनन्द करते हैं (लूका 15:7, 10), और स्वर्गदूत ही लाज़र को अब्राहम की गोद में ले गए थे (लूका 16:22)। इसलिए मुझे उनके लिए जिन्हें "धन्य, ... सहभागी हो" कहा गया था, स्वर्गदूतों को प्रभु के आधिकारिक स्वागतकर्ता दल के रूप में सोचना अच्छा लगता है (मत्ती 25:23)!

फाटकों के ऊपर "इस्राएलियों के बारह गोत्रों के[26] नाम" लिखे हुए थे (21:12घ)।[27] प्रकाशितवाक्य में "बारह गोत्रों" का इस्तेमाल आत्मिक इस्राएल (कलीसिया; देखें 7:4-

8),[28] और प्रकाशितवाक्य का विशेष उद्देश्य कलीसिया के घिरे हुए लोगों को प्रोत्साहित करना था, इसलिए यहां इस शब्द का इस्तेमाल सम्भवतया मसीही लोगों के लिए किया गया था। परन्तु यह सम्भव है कि हम इस संकेत को एक पुष्टि के रूप में देखें कि *हर* युग के विश्वासी स्वर्ग में होंगे। (देखें इब्रानियों 11:39, 40.)

फाटकों की सबसे हैरान करने वाली बात उनकी संरचना थी: "बारह फाटक मोतियों के थे; एक-एक फाटक एक-एक मोती का बना था" (21:21क)। ये फाटक मोतियों से *ढके* नहीं थे (जैसा कि आमतौर पर इस्तेमाल होने वाले शब्द "मोतियों के फाटक" से दर्शाया जाता है) बल्कि वे मोती *थे*। प्राचीन जगत में मोती सबसे अधिक पसन्द किए जाने वाली चीज़ों में शामिल थे। (मत्ती 13:46; 1 तीमुथियुस 2:9.) आपकी छोटी उंगली के सिरे के आकार के लगभग बारह नगों वाला मोती[29] भाग्य चमकाने वाला है। यदि किसी व्यक्ति के पास उस आकार के कई मोती हों तो वह जीवनभर बैठकर खा सकता है। फिर बारह बड़े-बड़े मोतियों की कल्पना करें, जो इतने बड़े हैं कि उनसे नगर का फाटक बन सकता है![30]

## सारांश

क्या हमें वचन पाठ के विवरणों को अक्षरश: लेना चाहिए? मूलवादियों का बचाव करते हुए चार्ल्स स्पर्जन ने नगर का फाटक बनाने के लिए इतने बड़े आकार के सीप के आकार की गणना की। फिर उसने इतना बड़ा सीप बनने के लिए आवश्यक समुद्र का अनुमान लगाया।[31] यह रूपक हमें अवाक करते रहने अर्थात हमें हंफाने, हमारा सिर चकराने और यह कहने के लिए है कि "यदि स्वर्ग *इस* से भी अद्‌भुत है तो यह कितना अद्‌भुत होगा!"[32]

---

टिप्पणियां

[1]हरबर्ट वी. प्रोचनो, *ए डिक्शनरी ऑफ़ विट, विज़डम, एण्ड सैटाइर* (न्यू यार्क: पॉपुलर लाइब्रेरी, 1964), 129 में उद्धृत। [2]ओपेरा *क्लेरी, द मेड ऑफ़ मिलन* (1823) से "होम स्वीट होम।" जॉन बार्टलैट, *बार्टलैट'स फैमिलियर कोटेशन्स,* सोलहवां संस्क., सामा. संस्क. जस्टिन कैप्लन (बोस्टन: लिटिल, ब्राउन एण्ड कं., 1992), 405 में उद्धृत। [3]जेम्स रोअ, "होम ऑफ़ द सोल," *सौंग्स ऑफ़ फेथ एण्ड प्रेज़,* संपा. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [4]ये पहले दो प्रश्न जिमी जिविडन, "होमसिक फ़ॉर हैवन" *अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी लैक्चर्स* (1980): 54 से लिए गए। [5]मेरी की कहानी डब्ल्यू. बी. वेस्ट जूनि., *रैवलेशन थ्रू फर्स्ट सैंचुरी ग्लासेस,* संपा. बॉब प्रीचर्ड (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1997), 150 से ली गई थी। [6]कलीसिया मेमने की दुल्हन है (देखें इफिसियों 5:22-32)। हमने सुझाव दिया है कि 21:2, 9 में "दुल्हन" शब्द का इस्तेमाल स्वर्ग में महिमा पाई हुई कलीसिया के लिए किया गया है। (इस पुस्तक के पाठ "सब कुछ नया" में 21:2 पर नोट्स देखें।) एक बार फिर लोगों (कलीसिया) और जगह (स्वर्ग) में अन्तर करना कठिन है: स्वर्गदूत ने यूहन्ना को बताया कि वह उसे दुल्हन दिखाएगा (आयत 9) परन्तु दिखाया उसने उसे नगर (आयत 10)। [7]यह नीचे उतरता दूसरा नगर या दूसरी

बार उतरता वही नगर नहीं है बल्कि 21:2 में बताई गई घटना ही है। प्रकाशितवाक्य में आमतौर पर एक ही घटना की बात एक से अधिक बार है (14:8 और 18:2 में तुलना करें; 9:20 और 16:9 भी देखें)। "स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरने" के सम्भावित अर्थ के बारे में, इस पुस्तक के पाठ "सब कुछ नया" में 21:2 पर टिप्पणियां देखें। [8]आवश्यक नहीं कि इसका संकेत यह हो कि यूहन्ना को देह में ले जाया गया था, बल्कि यह है कि उसकी आत्मा पवित्र आत्मा के नियन्त्रण में थी। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" में 1:10 पर नोट्स देखें। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" के पाठ "वस्तुओं को ध्यान में रखना" में टिप्पणी 5 भी देखें। [9]इस घटना की तुलना यहेजकेल 40:2 में वर्णित घटना से करें। यूहन्ना को बड़ा नगर बाबुल दिखाने के लिए *जंगल* में ले जाया गया था, परन्तु नये यरूशलेम को दिखाने के लिए *पहाड़* पर। [10]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" के पृष्ठ 57 पर यशब पर नोट्स देखें।

[11]देखें यहेजकेल 40:3. पहले यूहन्ना को मन्दिर को नापने का एक गज़ दिया गया था (11:1)। नापने का वह गज़ *छड़ी* वाला था और सुरक्षा के लिए दिया गया था। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 2" के पृष्ठ 84, 85 पर 11:1 पर नोट्स देखें।) अध्याय 21 में नापना स्वर्ग की शान से हमें प्रभावित करने के लिए *सोने* के औज़ार से हुआ। [12]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 2" के पृष्ठ 90 पर *stadia* और *stadion* पर नोट्स देखें। [13]NASB में रोमी नाप को मील में बदलकर वचन को समझाने का प्रयास किया गया है। अफसोस कि इससे अंकों का संकेत नहीं रहता। "पन्द्रह सौ" का कोई सांकेतिक महत्व नहीं है, परन्तु "बारह हज़ार" का है (जैसा कि हम इस पाठ में आगे देखेंगे)। [14]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क. द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 244. पन्द्रह सौ मील दूरी वाले नगरों की जगह उन नगरों का नाम बताएं जिनसे आपके सुनने वाले परिचित हों। [15]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 494. फिर, उसी तुलना का इस्तेमाल करें जिससे आपके सुनने वालों को समझ आ सके। [16]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" में "बारह" और इसके गुणाकों के सांकेतिक महत्व पर नोट्स देखें। [17]"बारह सौ" एक सौ को बारह से गुणा करने पर मिलता है और "एक सौ" दस का दस गुणा होता है। ("दस" अपने आप में पूर्णता का संकेत है; *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" के पृष्ठ 52 पर "दस" पर नोट्स पर विचार करें)। [18]पिरामिड भी वचन की मांग को पूरा करेगा, परन्तु घन का रूपक संदर्भ से अधिक मेल खाता प्रतीत होता है। घन नगर जैसा नहीं दिखाई देता इसलिए मैंने ब्रायन से अंदाजन बराबर लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई वाले आकार वाले नगर का रेखाचित्र बनाने के लिए कहा। [19]"मनुष्य के नाप से जिसे स्वर्गदूत इस्तेमाल कर रहा था" NASB के शब्दों "मनुष्य के नापों के अनुसार, जो स्वर्गदूत के नाप भी हैं" की तर्कसंगत व्याख्या है। कहने का अर्थ यह है कि स्वर्गदूत नापने की कोई ऐसी स्वर्गीय प्रणाली का इस्तेमाल नहीं कर रहा था, जिससे यूहन्ना के पाठक अपरिचित थे। [20]फिर NASB में इस्तेमाल किया गया संकेत अस्पष्ट है।

[21]भवन निर्माण कला के अनुसार कोई भी सम्भावना व्यावहारिक नहीं है, परन्तु इसका महत्व नहीं है क्योंकि अंक सांकेतिक हैं। रेखाचित्र बनाने के लिए मैंने ब्रायन वाट्स से दीवार की ऊंचाई जितना नाप लेने को कहा। [22]इस विवरण की तुलना यशायाह 54:11, 12 वाले विवरण से करें। [23]कई लोग "पौलुस छूट गया या नहीं" की बेकार चिन्ता करते हैं। "बारह प्रेरितों" *सभी* प्रेरितों का संकेत हैं और प्रकाशितवाक्य के इस भाग में "बारह" के सांकेतिक अंक के इस्तेमाल से मेल खाता है। [24]टीकाकार मोतियों की इस सूची से मोहित होते हैं जबकि कई इस सूची को सुलझाने के लिए पहेली मानते हैं। कई यह दिखाते हैं कि पत्थर वही हैं जो महायाजक के कवच में मिलते थे (निर्गमन 28:15-21)। अन्य उस समय के मोतियों के अन्धविश्वासी इस्तेमाल की ओर ध्यान लगाते हैं। उस समय कीमती पत्थरों के नामों पर एकरूपता नहीं थी। इसलिए हम पक्का नहीं कह सकते कि 19 और 20 आयतों में इस्तेमाल किए गए शब्दों वाले पत्थरों का *क्या अर्थ* है। सम्भवतया किसी "गहरे" महत्व को ढूंढ़ने के बजाय उनके *कुल* प्रभाव की कल्पना करना बेहतर है। अगली सूची से रंगों के बारे में 100 प्रतिशत सही हो सकती है और नहीं भी, परन्तु इससे आंखें खुली की खुली रखने वाली सजावट दिखाई देती है! [25]चारों दिशाओं का दिया जाना आमतौर पर पूरी मनुष्यजाति का संकेत होता

था। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" के पाठ "यहां अजगर होंगे" में "चार" के सांकेतिक अर्थ पर नोट्स देखें।) [26]जैसे बारह प्रेरितों के हवालों में पौलुस था या नहीं की बहस का कोई उद्देश्य नहीं है, वैसे ही यह चर्चा करने का कोई उद्देश्य नहीं है कि लेवीय गोत्र तेहरवां गोत्र था या नहीं। "बारह गोत्रों" वाक्यांश का *अर्थ पूरे* इस्राएल के लिए होता था। [27]यहेजकेल 48:30-35 में फाटकों का विवरण देखें। [28]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" में 7:4-8 पर नोट्स देखें। [29]अमेरिका में मैं कहूंगा, "लगभग कंचे जितना बड़ा मोती।" उदाहरण दिखाने के लिए आप गोल पत्थर (आपकी छोटी उंगली के सिरे के आकार का) इस्तेमाल कर सकते हैं। [30]कई लेखक मोती को कष्ट के द्वारा बने मोती के रूप में ही वर्णित करते हैं। (रेत का एक कण सीप के खोल में चला जाता है और पीड़ा को कम करने के प्रयास में सीप उस खुरदरे तल को ढक लेती है।) वे स्वर्ग में प्रवेश का सामांतर बनाती हैं, जिसमें स्पष्टतया कष्ट है: यीशु का कष्ट और आमतौर पर उसके पदचिह्नों पर चलने वालों का कष्ट। इस उदाहरण का कोई बाइबली आधार हो या न, परन्तु विचार उत्पन्न करने वाला अवश्य है।

[31]एच. एल. एलिसन, *1 पीटर-रैवलेशन,* स्क्रिप्चर यूनियन बाइबल स्टडी बुक्स सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1969), 88 से लिया गया। [32]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में होता है तो आपको अपने सुनने वालों को अपने आपको इस स्वर्गीय घर के लिए तैयार होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। ऐसा करने के ढंग के विचारों के लिए इस पुस्तक के पाठ "स्वर्ग की याद" में टिप्पणी 26 देखें।

## विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. "घर" शब्द सुनने पर आपके मन में क्या आता है? "स्वर्ग" शब्द सुनने पर आपके मन में क्या आता है?
2. स्वर्ग के विवरण के लिए सांकेतिक भाषा का इस्तेमाल क्यों किया गया है? क्या इसका अर्थ यह है कि स्वर्ग दिए गए विवरण से अधिक या कम अद्भुत है?
3. "बारह" अंक का सांकेतिक महत्व क्या है? इस पाठ में किए गए अध्ययन वाले वचन पाठ में "बारह" अंक कितनी बार आता है? "बारह" अंक के कौन से अलग-अलग मिश्रणों का इस्तेमाल किया गया है? (किसी ऐसे अनुवाद में देखें जिसमें यूनानी मापों को आधुनिक मापों में नहीं बदला गया है।)
4. इस तथ्य का महत्व क्या है कि स्वर्गीय नगर की लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई का आकार एक जैसा होगा?
5. आपको क्या लगता है कि फाटकों के रूप में *मोतियों* का इस्तेमाल किए जाने का कोई महत्व है?
6. 21:22-22:5 में दिए गए स्वर्ग के विवरण पर नज़र डालें। *आप* के लिए स्वर्ग की कीमती बात कौन सी है?
7. आप स्वर्ग में जाने के लिए तैयार कैसे हो सकते हैं?

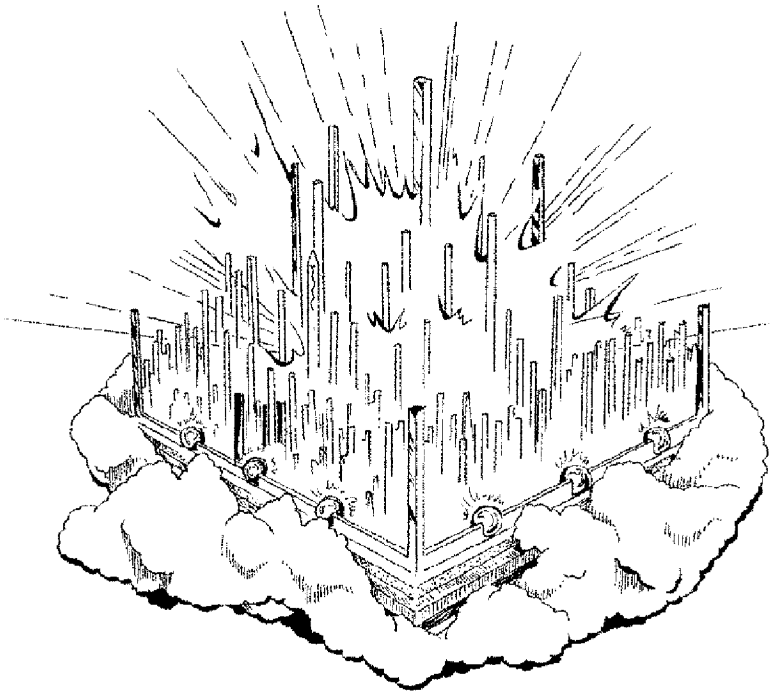

पवित्र नगरी यरुशलेम के परमेश्वर के पास स्वर्ग से नीचे उतरने (21:10)